पुस्तक समीक्षा

भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा
8(2) 243–244, 2021
© 2020 Indian Sociological Society
Reprints and permissions:
in.sagepub.com/journals-permissions-india
DOI: 10.1177/2349139621l029743
http://bss.sagepub.in

कैथरीन यंग (2021) *टर्बुलेंट ट्रांसफॉरमेशन्स: नॉन ब्राह्मण श्रीवैष्णवाज़ ऑन रिलिजन, कास्ट एंड पॉलिटिक्स इन तमिलनाडु*, हैदराबाद:ओरिएंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, पीपी. 399, मूल्य रू. 670=00 (पेपरबैक), आईएसबीएन: 978-81-949258-8-0

विगत दो शताब्दियों से दक्षिणी भारत में व्यापक रूप से हुए धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों में तमिल नवजागरण, मद्रास प्रेसीडेंसी में उपनिवेशवाद, द्रविड़ राष्ट्रवाद, दलित संगठन, स्वतंत्रता के लिए भारतीय संघर्ष और फिर तमिलनाडु के रूप में नई राजनीतिक इकाई का गठन मुख्य हैं।

यह पुस्तक आधुनिक तमिलनाडु में धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक अस्मिता का अध्ययन करती है। यह पुस्तक कईगैर-ब्राह्मण श्रीवैष्णवों के विभिन्न जातिगत समूहों के साथ साक्षात्कार के आधार पर, श्रीवैष्णवों में भेदभाव के उनके मौखिक इतिहास, जीवित वास्तविकताओं के अंतर्द्वंद्व और भविष्य के प्रति आशाओं का विश्लेषण करती है। अध्ययन क्षेत्र में ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हिंदू संप्रदाय श्रीवैष्णवों के इतिहास, उनके धर्मशास्त्रों में जाति के समावेश और ब्राह्मण नेतृत्व की विशिष्टता के इतिहास के प्रसंगों को साक्षात्कारों में संदर्भित किया गया है। इसके अतिरिक्त पुस्तक में औपनिवेशिक काल में परिवर्तन, तेलुगु सम्बन्ध, गैर-ब्राह्मण आंदोलन, दलित संगठन, स्वतंत्रता-पश्चात जाति पदानुक्रम, सरकारी नीतियाँ, दलीय राजनीति, ब्राह्मण प्रतिक्रियाएं, अदालती मामलों और अंतर-धार्मिक प्रतियोगिताओं को भी संदर्भित किया गया है।

इस पुस्तक में आठ अध्याय हैं: 1. परिचय: पृष्ठभूमि, 2. गैर ब्राह्मण श्रीवैष्णव नेताओं के चिह्न, 3. चेन्नई और इससे परे की कहानियां, 4. पांडुचेरी और इससे परे का मौखिक इतिहास, 5. श्रीरंगम, तंजावुर और इनसे परे की कहानियाँ, 6. श्रीवैष्णव ब्राह्मणों की आवाज, 7. मंदिर की राजनीति और न्यायपालिका, 8. बड़े लक्ष्यों के बारे में सोचना।

यह किताब श्रीवैष्णव ब्राह्मण समाज के दृष्टिकोण से आधुनिक तमिलनाडु में आए अशांत परिवर्तनों के बारे में है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में वैष्णव शब्द उस परंपरा को समझने वाला एक सूत्र है जिसमें एक ही देवता को ऐतिहासिक और काल्पनिक विविधताओं के आधार पर विष्णु, नारायण, कृष्ण और राम जैसे विभिन्न नामों से पूजा जाता है। यद्यपि तमिलनाडु में अन्य वैष्णव समुदाय जैसे माधव और महाराष्ट्रीय वैष्णव भी मौजूद हैं परन्तु यहाँ सबसे अधिक उपस्थिति श्रीवैष्णव ब्राह्मण समाज की है जो विष्णु के साथ श्री की पूजा, पूर्वजों से प्राप्त दार्शनिक परंपरा 'विशिष्टाद्वैत' के आधार पर करते हैं।

औपनिवेशिक काल में कट्टरपंथी गैर-ब्राह्मण नेता इस अशांत परिवर्तन को नया आधार प्रदान करते हैं। यह पेरियार और जयललिता जैसे प्रमुख राजनीतिज्ञों के श्रीवैष्णव समाज के साथ सम्बन्धों

का विश्लेषण करता है, और 'पुजारी बनने की योग्यता' जैसे प्रश्नों के उत्तर में मंदिर, राज्य और सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका का उल्लेख करता है। गैर-ब्राह्मण लेबल को रेखांकित करने वाले विभिन्न परिप्रेक्ष्यों पर प्रकाश डालने के अलावा यह पुस्तक लोकतंत्र, जाति और आधुनिक हिंदू धर्म के नए विन्यास और दोषों के सम्बन्ध में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। यह ब्राह्मण समाज द्वारा दिए आख्यानों, विद्वानों द्वारा तमिल शैववाद और ईसाई धर्म पर केंद्रित अध्ययनों में और विगत सदी में गैर-ब्राह्मण आंदोलन में धर्म की गतिशील स्पंद से हटाये गए राजनीतिक और समाजशास्त्रीय विश्लेषण में व्याप्त खामियों की पूर्ति करता है।

पुस्तक में अंतिम रूप से कैथरीन यंग का मानना है कि इस तथ्य, जिसे वह 'बड़ी तस्वीर' कहती हैं, पर चर्चा होनी चाहिए कि आज श्रीवैष्णव समाज के रिवाज़ और पहचान आधुनिकता की व्याख्या करने वाली शक्तियों द्वारा निर्मित हैं। इस बात पर चर्चा चल रही है कि क्या तर्कसंगतता और स्वायत्तता, औद्योगीकरण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, एक बाजार अर्थव्यवस्था, शहरीकरण, आधुनिक राज्य, लोकतंत्र, शोषण से मुक्ति, नई सामूहिकता, मानव अधिकार, सार्वभौमिक शिक्षा, कानून का शासन, व्यक्तिवाद, इंटरनेट और धर्मनिरपेक्षता ही आधुनिकता की मूल परिभाषा हैं।

इस बात पर भी चर्चा की जा रही है कि क्या आधुनिकता, अनुकूलन अथवा गहन संरचनात्मक परिवर्तन द्वारा सामाजिक परिवर्तन की मात्रा को इंगित करती है या नहीं, यह परिवर्तन चाहे गतिशील हो अथवा स्थायी , चाहे यह प्रक्रिया पूर्वनिर्धारित हो या न हो, चाहे उसमें सार्वभौमिक विशेषताएं हों अथवा अलग-अलग प्रतिक्रियाएं हों, चाहे उसमें मातृत्व वास्तविक हों या भूलवश हों, और क्या 'लेट मॉडर्निटी' एवं 'पोस्ट मॉडर्निटी' में आधुनिकता का उल्लेख एक नई प्रघटना के रूप में किया गया है, या क्या इस तरह के परिवर्तन केवल एक विषय की विविधताएं मात्र हैं। इस शब्द का विश्लेषण इतिहासलेखन और विद्वानों द्वारा स्थापित प्रतिमानों जैसे कि प्रकार्यात्मकवाद, मर्क्सवाद अथवा 'पोस्ट मॉडर्निज्म' तक विस्तृत हुआ है।

पारंपरिक श्रीवैष्णव कृतियाँ न केवल संस्कृत, तमिल, मणिप्रवलम और तेलुगु भाषा में लिखी गयी हैं, बल्कि उन्हें अन्य भाषाओं में भी लिपिबद्ध किया गया है। कैथरीन यंग उन लोगों के लिए श्रीवैष्णववाद की अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं जो हिन्दू धर्म के बारे में सामान्य ज्ञान रखते हैं। 'टरब्यूलेंट ट्रांसफॉर्मेशन' हिंदूधर्म, मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, औपनिवेशिकता और उपनिवेशवाद तथा राजनीति और धर्म के मध्य सम्बन्धों जैसे विषयों में रुचि रखने वाले शोध छात्रों और विद्वानों के लिए रुचिकर होगा।

डी. एस. बिष्ट
समाजशास्त्र विभाग
डी.एस.बी. परिसर
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
उत्तराखण्ड - 263001
ईमेल : drdsbisht@yahoo.co.in